❍ 27 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗आप समान बनाने की सेवा की ?∗

➢➢ ∗अपने स्नेह के शीतल स्वरुप द्वारा विकराल ज्वाला रूप को परिवर्तित किया ?∗

➢➢ ∗कठिनाइयों से घबराए तो नहीं ?∗

➢➢ ∗लवलीन स्थिति का अनुभव किया ?∗

──────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

~~✧ ∗परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने का साधन है - माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना∗ क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रायल ईश्वरीय रुप रच करके आती है, जिसको ∗परखने के लिए एकाग्रता अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ।∗

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं निश्चयबुद्धि विजयी रत्न हूँ"*

~✧ *'सदा निश्चयबुद्धि विजयी रत्न हैं।' - इसी नशे में रहो। निश्चय का फाउन्डेशन सदा पक्का है! अपने आप में निश्चय, बाप में निश्चय और ड्रामा की हर सीन को देखते हुए उसमें भी पूरा निश्चय।* सदा इसी निश्चय के आधार पर आगे बढ़ते चलो।

~✧ *अपनी जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना तो फिर खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। बाप का हाथ लिया तो बाप का हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, यह निश्चय रखो।*

~✧ जब बाप सर्वशक्तिवान है तो उसका हाथ पकड़ने वाले पार पहुँचे कि पहुँचे। चाहे खुद भले कमजोर भी हो लेकिन साथी तो मजबूत है ना। इसलिए पार हो ही जायेंगे। *सदा निश्चयबुद्धि विजयी रत्न, इसी स्मृति में रहो। बीती सो बीती, बिन्दी लगाकर आगे बढ़ो।*

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ऑर्डर करें मधुरता स्वरूप बनना है और समस्या अनुसार, परिस्थिति अनुसार क्रोध का महारूप नहीं लेकिन सूक्ष्म रूप भी आवेश वा चिडचिडापन आ रहा है, क्या यह ऑर्डर है? ऑर्डर में हुआ? *ऑर्डर करें हमें निर्मान बनना है और वायुमण्डल अनुसार सोचो कहाँ तक दबकर चलेंगे, कुछ तो दिखाना चाहिए।*

〰✧ क्या मुझे ही दबना है? मुझे ही मरना है! मुझे ही बदलना है? क्या यह लव ऑर ऑर्डर है? इसलिए *विश्व के ऊपर, चिल्लाने वाले दु:खी आत्माओं के ऊपर रहम करने के पहले अपने ऊपर रहम करो।* अपना अधिकार सम्भालो। *आगे चल आपको चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का बहुत कार्य करना है।*

〰✧ पहले भी सुनाया कि अभी तक जो जो जहाँ तक सेवा के निमित हैं, बहुत अच्छी की है और करेंगे भी लेकिन अभी समय प्रमाण तीव्र गति और बेहद सेवा की आवश्यकता है। तो *अभी पहले हर दिन को चेक करो 'स्वराज्य अधिकार' कहाँ तक रहा?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ ऐसे तो नहीं कि बहुत सुनते हो तो बिन्दु-स्वरूप में रहना मुश्किल हो जाता है? *परन्तु बिन्दु-रूप में स्थित रहने की कमी का कारण यही है कि पहला पाठ ही कच्चा है।* कर्म करते हुए अपने को अशरीरी आत्मा महसूस करें - यह सारे दिन में बहुत प्रैक्टिस चाहिए। *प्रैक्टिकल में न्यारा होकर कर्तव्य में आना - यह जितना-जितना अनुभव करेंगे उतना ही बिन्दु-रूप में स्थित होते जावेंगे।*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- लोक लाज, कलियुगी कुल की मर्यादाएं छोड़ कमाई करना"*

➳ _ ➳ मधुबन घर में डायमण्ड हॉल में अपने प्यारे बाबा को निहारती हुई मै आत्मा... कभी अपने महान भाग्य को, कभी इस ईश्वरीय मिलन के खुबसूरत समय को... देख रही हूँ... कि जीवन में अनगिनत दुखो की भोगना यूँ पीछे गुजर गयी... और मै आत्मा इस खुबसूरत समय पर भगवान के सम्मुख आ गयी... *इस सुनहरे वक्त ने मुझे ईश्वर से मिलाकर... मेरा भविष्य सुनहरे अक्षरो में लिख दिया है... आज सतयुग मेरे कदमो की आहट लेने को आतुर है... सुख मेरी बाट जोह रहे है.. खुशियां मेरा रास्ता निहार रही है.*.. अमीरी मुझे बाँहों में भर लेने को दीवानी है... सारे दुःख गायब हो गए है और अथाह सुख मेरी नजरो में प्रत्यक्ष हो रहे है... और कह रहे है... मीठे बाबा की यादो में गहरे डूब जाओ... ती हम सजीव बन आपकी सेवाओ में हाजिर है... *वाह... कितना प्यारा यह, मीठे बाबा के साथ भरा समय है.*..

❊ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अमूल्य ज्ञान मणियो से सजाकर कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *ईश्वरीय ज्ञान रत्नों को पाकर, यादो में सच्ची कमाई करने वाले महान भाग्यशाली बनो.*.. संगम के वरदानी समय के हर पल को यादो में सफलकर सच्ची कमाई से भरपूर बनो... ईश्वर के साथ भरा यह मीठा समय... अब व्यर्थ बातो में नही गंवाओ... मीठे बाबा से सारी दौलत खजाने लेकर... सदा की अमीरी से सज जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के प्यार में सारी जागीर की मालिक बनकर कहती हूँ ;-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा आपकी छत्रछाया में सुखी और अमीर जीवन को पाती जा रही हूँ... *आपको पाकर अब मै आत्मा किसी भी व्यर्थ में स्वयं को उलझाती नही हूँ... बल्कि हर क्षण यादो में खोकर, अपने सारे विकर्मो से मुक्त होती जा रही हूँ.*.. यादो की कमाई करके विश्व की अमीरी को पाती जा रही हूँ ..."

❊ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को समय का महत्व समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *यही वह कीमती पल है, जिसमे मीठे बाबा को याद करके... अथाह सम्पत्ति और सुख भरा भविष्य अपनी तकदीर में सजा सकते हो.*.. इस सुनहरे समय को साधारण रीति या व्यर्थ में न बिताओ... हर पल याद का निरन्तर अभ्यास कर... स्वयं का महान भाग्य स्वयं लिखो... सच्ची

कमाई के पीछे दीवाने होकर जुट जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की श्रीमत को दिल में गहरे उतार कर कहती हूँ ;-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा देह की और दुखो की दुनिया में जो घिरी तो... अपनी सारी खुशियां गुण और दौलत ही गंवा बेठी... अब आपने आकर मुझे पुनः दौलतमंद और खुशहाल बनने का सारा राज बता दिया है... *मै आत्मा हर सांस आपकी यादो में डूबकर, सच्ची दौलत को अपनी बाँहों में बटोरती जा रही हूँ..*."

❇ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सर्वगुणों और शक्तियो से भरपूर करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... इस पुरानी दुनिया की विनाशी दौलत के पीछे बहुत खपे हो... अब मीठे बाबा से 21 जनमो की अमीरी लेकर विश्व के बादशाह बनो... *एक एक पल कमाई से भरपूर हो, मन बुद्धि को मीठे बाबा की याद में पूरा झोंक दो.*.. यादो में ही पुराने सारे विकर्म भस्म होंगे और सुखो भरा खुबसूरत जीवन आपके हाथो में होगा... इसलिए निरन्तर याद में खोये रहो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्यारे बाबा को मुझ आत्मा के सुख के लिए इस कदर आतुर देख कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा कितनी महान हूँ, और कितनी भाग्यशाली हूँ... कि भगवान बेठ मुझे यूँ अमीर बना रहा है... और मुझे विश्व का मालिकाना हक दिलवा रहा है... मै आत्मा इतनी अमीर बनूंगी, यह तो कभी ख्यालो में भी न था... *आज आपकी सच्ची यादो में यह जीवन की खुबसूरत हकीकत बन रही है... और मै आत्मा हर साँस से यादो की कमाई कर, अमीर और अमीर होती जा रही हूँ.*.."प्यारे बाबा से यूँ मीठी रुहरिहानं कर मै आत्मा... अपने कर्मक्षेत्र पर लौट आयी....

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- नींद को जीतने वाला बन रात में कमाई जमा करनी है*"

➳ _ ➳ जिस विश्वास, प्यार और त्याग की तलाश देह और देह के सम्बन्धो में मैं कर रही थी वो विश्वास, प्यार और त्याग मुझे कभी कोई देहधारी दे ही नही सकता इस बात का एहसास मुझे मेरे साथी दोस्त शिव भगवान ने आकर करवा दिया। *और अब जबकि इतनी तलाश के बाद, इतना भटकने के बाद मेरी आँखों के सामने मेरा वो भगवान खुद चल कर मेरे सामने आ गया है तो मेरी पलकें एक सेकंड के लिए भी कैसे झपक सकती है! मुझे नींद कैसे आ सकती है*! जिन नयनों में अपने सांवरे सलौने श्याम की सूरत बसी हो वो नयन उसे देखे बिना कैसे रह सकते हैं!

➳ _ ➳ मन ही मन स्वयं से बातें करती मैं अपने नयनों में अपने निराकार भगवान बिंदु बाप को बसाये उनके पास जाने के लिए अपने निराकार बिंदु स्वरूप में स्थित होती हूँ। *अपने मन बुध्दि को हर संकल्प, विकल्प से मुक्त कर अपना सम्पूर्ण ध्यान मैं जैसे ही अपने स्वरूप पर एकाग्र करती हूँ। देह के भान से मैं मुक्त होकर पॉइंट ऑफ लाइट बन बड़ी आसानी से अपने शरीर रूपी रथ को छोड़ उससे बाहर आ जाती हूँ*। देह से बाहर निकलते ही देह के हर बन्धन से मुक्त एक अति सुखद, एक दम हल्केपन का अनुभव मुझे आनन्द विभोर कर देता है। ऐसा आनन्द, ऐसा हल्कापन तो मैंने आज तक महसूस नही किया था। *यह हल्कापन मन को असीम सुकून दे रहा है और मुझे इस नश्वर देह की दुनिया के हर लगाव से मुक्त कर ऊपर की ओर ले जा रहा है*।

➳ _ ➳ स्वयं को मैं धरती के हर आकर्षण से मुक्त अनुभव कर रही हूँ और एक बैलून की भांति एकदम हल्की होकर ऊपर की ओर उड़ती जा रही हूँ। *प्रकृति के खूबसूरत नजारो का मैं आनन्द लेती इस अति मनभावन सुखदाई आंतरिक यात्रा पर निरन्तर बढ़ते हुए मैं आकाश को भी पार कर जाती हूँ। उससे और आगे की यात्रा पर निरन्तर बढ़ते हुए अब मैं सफेद प्रकाश की दुनिया को पार कर एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करती हूँ जहां चारों और एक गहन शांतमयी लाल सुनहरी प्रकाश ही प्रकाश फैला हुआ है*। शांति की यह दुनिया वही ब्रह्म तत्व है जिसमे समा जाने का लक्ष्य रख साधू महात्माये कठोर तपस्या करते हैं लेकिन इस स्थान तक कभी नही पहँच पाते।

➳ _ ➳ ऐसे निर्वाणधाम अपने ब्रह्म तत्व घर में अब मैं गहन शांति की अनुभूति करते हुए इस अंतहीन ब्रह्मांड में बिल्कुल उन्मुक्त अवस्था में विचरण कर भरपूर आनन्द का अनुभव कर रही हूँ। *जिस भगवान का पता सारी दुनिया का कोई भी मनुष्य मात्र नही जानता अपने उस निराकारी भगवान बाप के साथ उसकी निराकारी दुनिया में मैं स्वयं को उसके सम्मुख देख रही हूँ*। उसकी सर्वशक्तियों की अनन्त किरणे मुझे ऐसा आभास करवा रही हैं जैसे अपनी किरणो रूपी बाहों को फैलाये वो मुझे अपनी बाहों में भर कर अपने असीम प्यार से मुझे तृप्त करने के लिए मुझे अपने पास बुला रहा है।

➳ _ ➳ अपने पिता परमात्मा से पूरे एक कल्प की बिछड़ी मैं प्यासी आत्मा स्वयं को तृप्त करने के लिए अपने पिता के पास पहुँचती हूँ और जा कर उनकी किरणों रूपी बाहों में समा जाती हूँ। *अपनी किरणों रूपी बाहों के झूले में मुझे झुलाते अपना सारा प्यार मेरे मीठे बाबा मुझ पर उड़ेल कर मेरी जन्म - जन्म की प्यास बुझा रहें हैं*। देह भान में आने से मेरे सर्व गुण, सर्वशक्तियाँ जिन्हें मैं भूल गई थी उन गुणों, उन शक्तियों को बाबा अपने गुणों औए सर्वशक्तियों की अनन्त धाराओं के रूप में मुझ पर बरसाते हुए उन्हें पुनः जागृत कर रहे हैं।

➳ _ ➳ अपने बाबा की सर्वशक्तियों की अनन्त किरणों को मैं जैसे - जैसे अपने ऊपर अनुभव कर रही हूँ मुझे मेरी सोई हुई शक्तियाँ जागृत होती हुई स्पष्ट अनुभव हो रही हैं जो मुझे बहुत ही शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करवा रही हैं। *अपने निराकार भगवान बाप के साथ अपने निराकारी घर में मिलन मनाने का सुखद एहसास अपने साथ लेकर, सर्वगुण और सर्वशक्तिसम्पन्न बनकर मैं वापिस कर्म करने के लिए अपनी कर्मभूमि पर लौटती हूँ*।अपने साकार शरीर रूपी रथ पर बैठ हर कर्म करते, अपने निराकार भगवान बाप के अति सुन्दर स्वरूप को अपने नयनों में बसाये, मैं उनके सुन्दर सलौने स्वरूप का रसपान हर समय करती रहती हूँ।

➳ _ ➳ मेरे मन बुध्दि रूपी नयन हर समय अपने भगवान बाप के अति सुंदर मनमोहक निराकार स्वरूप को देखने के लिए व्याकुल रहते हैं *इसलिए निद्रा का त्याग कर, निद्रा जीत बन मैं मन बदिध की रूहानी यात्रा करते, मन

बुद्धि के नेत्रों से अपने शिव पिता का दीदार करती रहती हूँ और उनके साथ सदा अतीन्द्रीय सुख के झूले में झूलती रहती हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अपने स्नेह के शीतल स्वरूप द्वारा विकराल ज्वाला रूप को भी परिवर्तन करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं स्नेही मूर्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा कठिनाइयों को पार करके ताकतवर बन जाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा घबराने से सदा मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *आज समर्थ बाप अपने स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। आज विशेष चारों ओर के बच्चों में स्नेह की लहर लहरा रही हैं। विशेष ब्रह्मा बाप के स्नेह की यादों में समाये हुए हैं। यह स्नेह हर बच्चे के इस जीवन का वरदान है।* परमात्म स्नेह ने ही आप सबको नई जीवन दी है। हर एक बच्चे को स्नेह की शक्ति ने ही बाप का बनाया। यह स्नेह की शक्ति सब सहज कर देती है। जब स्नेह में समा जाते हो तो कोई भी परिस्थिति सहज अनुभव करते हो। *बापदादा भी कहते हैं कि सदा स्नेह के सागर में समाये रहो। स्नेह छत्रछाया है, जिस छत्रछाया के अन्दर कोई माया की परछाई भी नहीं पड़ सकती।* सहज मायाजीत बन जाते हो। *जो निरन्तर स्नेह में रहता है उसको किसी भी बात की मेहनत नहीं करनी पड़ती है। स्नेह सहज बाप समान बना देता है।* स्नेह के पीछे कुछ भी समर्पित करना सहज होता है।

➳ _ ➳ 2. *जैसे इस विशेष स्मृति दिवस में अर्थात् स्नेह के दिन में स्नेह में समाये रहे ऐसे ही सदा समाये रहो, तो मेहनत का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ेगा।*

✺ *ड्रिल :- "परमात्म स्नेह की शक्ति का अनुभव"*

➳ _ ➳ *"आबू का तीर्थ तुमको पुकारे आजाओ ब्रह्मा बाबा हमारे, आना ही होगा, आना ही होगा, आना ही होगा"...* ये गीत सुनते सुनते मैं आत्मा अपने अलौकिक पिता *ब्रह्मा बाबा* के स्मृति दिवस को याद करती हूं... बाबा मेरे प्यारे बाबा कहाँ हो आप... उनकी यादों में खोई मैं पहुँचती हूं *पांडव भवन... अपने बाबा की तपस्या स्थली पर जहां मेरे अलौकिक पिता मेरे ब्रह्मा बाबा ने शिव पिता की याद में रह सम्पूर्णता प्राप्त की... ये भूमि कितनी पावन है...*

➳ _ ➳ स्मृति दिवस पर बाबा के सभी बच्चे बाबा से मिलन मनाने आए हुए हैं... सब बच्चे विशेष ब्रह्मा बाबा की याद में बैठे हैं... *आबू भूमि की इस धरती पर, इस पावन धरा पर चारों तरफ़ रूहानी खुशबू फैली हुई है... ये मेरे प्यारे बाबा के स्नेह की खशब है... और सनाई दे रही है...* रूहानी स्नेह

सरगम, इस सरगम की तरंगों में मैं आत्मा गुनगुनाने लगती हूं... *"स्नेह प्यार की तुझसे ओ बाबा बाँधी है जीवन डोर, बाँधी है जीवन ड़ोर"...*

➳ _ ➳ *मेरे पिता आदिदेव ब्रह्मा बाबा जो मुझ आत्मा की पालना कर रहे हैं... दिव्य गुणों से मुझे गुणवान बना रहे हैं... रोज़ शिव बाबा की श्रीमत को अपने मुख द्वारा सुना मुझे हीरे जैसे बना रहे हैं...* जहाँ कभी भी मैं अलबेलेपन में आती हूं बड़े प्यार से समझानी देते हैं... *बच्चे तुम्हें बाप समान बनना है...* उन्हीं मेरे स्नेही ब्रह्मा बाबा का आज स्मृति सो समर्थी दिवस है...

➳ _ ➳ *शान्ति स्तम्भ के आगे बैठते ही बाबा के स्नेह की छत्रछाया का अनुभव होने लगता है... बाबा अपने स्नेह पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं... बाबा का स्नेह ही मुझ आत्मा को समर्थ बना रहा है... ये परमात्म स्नेह ही मुझे मायाजीत बना रहा है...* बाबा का वरदानी हाथ मुझे अपने सर पर महसूस होता है... इसी स्नेह शक्ति के बल को अपने अंदर समाये मैं सहज होती जा रही हूं...

➳ _ ➳ *बाबा के प्यार से मैं बिना मेहनत तीव्र गति से अपना पुरुषार्थ कर रही हूं...* और अपने ऊपर अलौकिक और अपने पारलौकिक पिता की छत्रछाया का अनुभव करती हूं... *बाबादादा का स्नेह रूपी हाथ और साथ मुझे हर परिस्थिति को उड़ाते हुए पार करा रहा है... मैं आत्मा समर्थी स्वरूप बन रही हूं...* ये बाबा के स्नेह सुमन की बरसात ही है, जिसमें भीग मैं आत्मा निरंतर आगे बढ़ती जा रही हूं... *ये परमात्म स्नेह की शक्ति ही है जो मुझ आत्मा को सब कुछ सहज लग रहा है...* अहो सौभाग्य! मुझ आत्मा का जो ये वरदानी जीवन मिला... *बाबा के स्नेह में समाई मुझ आत्मा के अंदर एक ही धुन बज रही है... मैं बाबा की बाबा मेरा... मैं बाबा की बाबा मेरा...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔